International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

''जनसंख्या वृद्धि मानव संसाधन के रूप में''

श्रीमती ममता देवी यादव

सहायक प्राध्यापक भूगोल, शासकीय महाविद्यालय दलौदा मंदसौर म.प्र.

एम.ए.– भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान

शोध सारांश :

वर्तमान समय में जनसांख्यिकी विशेषताओं का अध्ययन भूगोलवेत्ताओं के साथ ही अन्य समाज विज्ञानों में महत्वपूर्ण है। जनसांख्यिकी विशेषताओं में जनसंख्या वृद्धि एक महत्वपूर्ण घटक है। जनसंख्या वृद्धि का आशय किसी क्षेत्र में दो निश्चित समय अन्तरालों के बीच होने वाले परिवर्तन से है। जनसंख्या किसी भी क्षेत्र का महत्वपूर्ण संसाधन होती है क्योंकि अन्य सभी प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा उपयोगिता मानवीय संसाधन की कुशलता तथा तकनीकी ज्ञान पर ही निर्भर होती है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता जिम्मेरमैन के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि प्रकृति में सभी संसाधनों को उपयोगिता प्रदान करने में मानव का मुख्य योगदान होता है अतः मानव स्वयं भी एक संसाधन है। जनसंख्या वृद्धि के मात्रात्मक और गुणात्मक पहलु में गुणात्मक पहलु अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि को मानव संसाधन के रूप में विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्द – जनसांख्यिकी, संसाधन, उपयोगिता, जनसंख्या वृद्धि, गुणात्मक पहलू

प्रस्तावना :

जनसंख्या किसी भी देश का महत्वपूर्ण घटक होती है। जनसंख्या को जब दो निश्चित समय अन्तरालों के आधार पर देखे तो जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन का बोध होता है जिसे जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जनसंख्या वृद्धि के अनेक परिणाम परिलक्षित होते हैं। जनसंख्या वृद्धि अगर संसाधनों की तुलना में अतिरेक की स्थिति में हो तो यह पर्यावरण ह्रास का कारण बनती है लेकिन प्रकृति में उपलब्ध समस्त वस्तुओं तथा सेवाओं को उपयोगिता प्रदान कर संसाधन के रूप में विकसित करने में मानव का ही योगदान होता है अतः मानव स्वयं भी एक संसाधन है।

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास उस क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या के स्तर तथा तकनीकी पर निर्भर करता है। किसी भी देश के लोग उसकी अमूल्य सम्पदा होती है। जिसे शिक्षा, स्वास्थ्य तथा उचित तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर मानव संसाधन के रूप में बदला जा सकता है, इसे मानव पूंजी निर्माण कहा जाता है। जैसे उच्च शिक्षा और कौशल युक्त वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि मानव संसाधन के रूप में बौद्धिक सम्पदा होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में जनसंख्या वृद्धि का मानव संसाधन के रूप में विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार है –

1. सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण करना।

2. सीकर तथा राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान का सीकर जिला है, जो राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में $27^0 21'$ उत्तरी अक्षांश से $28^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^0 44'$ पूर्वी देशान्तर से $75^0 25'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है सीकर जिले का क्षेत्रफल 7742 वर्ग किमी है तथा राज्य में शेखावाटी अंचल का एक प्रमुख जिला है।

अवस्थिति की दृष्टि से सीकर के उत्तर दिशा में झुन्झुनूं, उत्तर–पश्चिम दिशा में चुरू, दक्षिण–पश्चिम दिशा में नागौर, दक्षिण–पूर्व दिशा में जयपुर जिलों की सीमा स्पर्श करती है जबकि उत्तर–पूर्व दिशा में महेन्द्रगढ़ जिले (हरियाणा) की सीमा स्पर्श करती हैं।

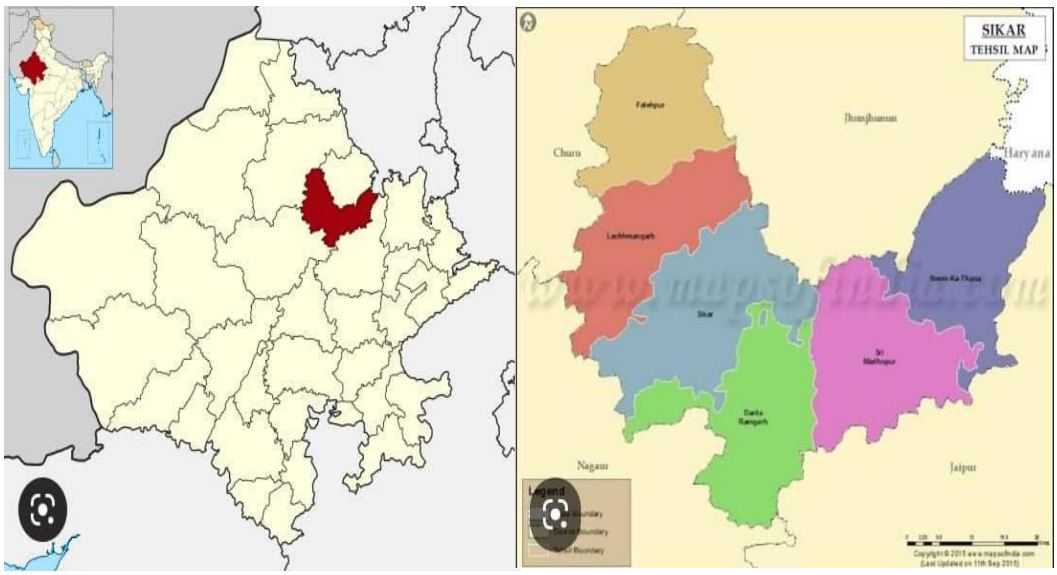

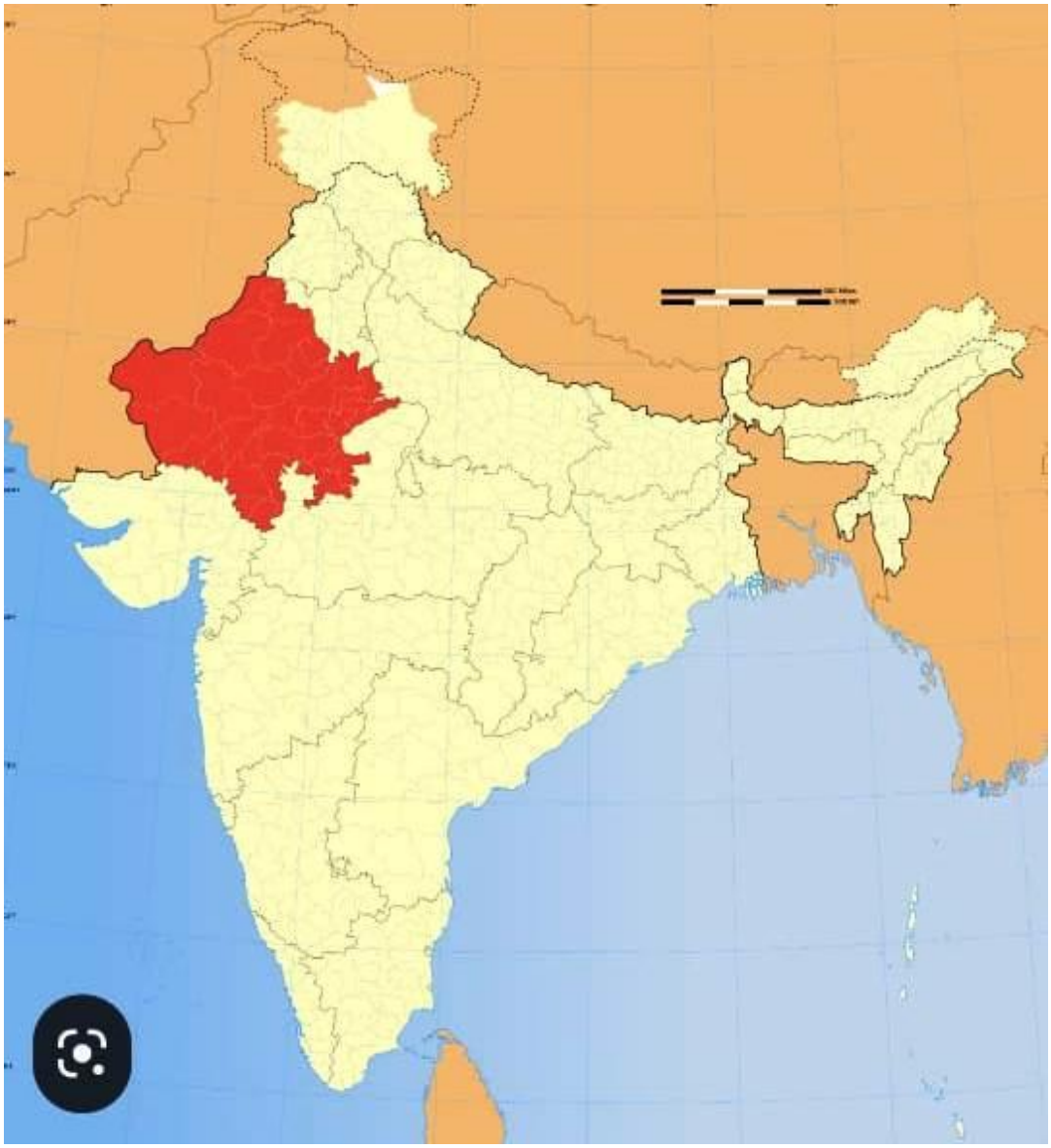

सीकर जिले का अध्ययन क्षेत्र

साहित्यावलोकन :

- चौधरी अश्वजीत, कुमार दिनेश (2019) ने अपने शोध लेख "जनसांख्यिकीय विशेषताओं के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण : जनपद रायबरेली का एक प्रतीक अध्ययन" में उत्तरप्रदेश के रायबरेली जनपद की जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, आयु लिंग संरचना का विश्लेषण किया है।
- शंकरलाल तथा कुड़ी राजेन्द्र (2019) ने अपने शोध लेख "सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील में जनांकिकी का विश्लेषण" में सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या वितरण, वृद्धि, साक्षरता तथा लिंगानुपात का अध्ययन किया है।

- मीणा जगमाल (2016) ने अपने शोध लेख "भीलवड़ा जिले में जनजातिय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन" में राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में जनजातिय जनसंख्या का वितरण, घनत्व, वृद्धि का विश्लेषण किया है।
- मौर्य, एस.डी. (2009) ने अपनी पुस्तक "जनसंख्या भूगोल" में जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया है।
- चान्दना आर.सी. (2014) ने अपनी पुस्तक "जनसंख्या भूगोल" में जनसंख्या वृद्धि के मापन, प्रभावित करने वाले तत्व आदि का विश्लेषण किया है।
- प्रियंका तथा चौधरी अल्का (2018) ने अपने शोध लेख "जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व का तुलनात्मक अध्ययन : राजस्थान राज्य के उत्तरी–पूर्वी जिलों के विशेष संदर्भ में" बताया की राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी जिलों में जनसंख्या वृद्धि दर अन्य भागों की तुलना में अधिक हैं।

आंकड़ों के स्रोत तथा विधि तंत्र :

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया है जिसमें भारत जनगणना, जिला जनगणना बुक, जिला सांख्यिकी रूपरेखा जिला सीकर से आंकड़ों का संकलन किया तथा जनसंख्या वृद्धि को तुलनात्मक, विश्लेषण हेतु सारणीयन व रेखा तथा दण्ड आरेख का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या वृद्धि के घटक :

जनसंख्या वृद्धि के लिए मुख्य रूप से तीन घटक उत्तरदायी है जिनमें जन्म दर तथा मृत्यु दर प्राकृतिक घटक है जबकि प्रवास एक अन्य प्रमुख घटक है। सीकर जिले की अशोधित जन्म दर 24.1 है जबकि अशोधित मृत्यु दर 6 है।

सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि :

सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का विश्लेषण करने हेतु 1901 से 2011 के जनगणना आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

सारणी 1

सीकर जिले में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (1951–2011)

सीकर			राजस्थान	
वर्ष	जनसंख्या (लाख में)	वृद्धि दर प्रतिशत में	जनसंख्या (करोड़ में)	वृद्धि दर प्रतिशत में
1901	4.66	–	1.029	–

1911	4.69	+0.60	1.098	+6.70
1921	4.62	−1.46	1.029	−6.29
1931	5.21	+12.65	1.174	+14.14
1941	6.14	+17.93	1.386	+18.01
1951	6.76	+10.04	1.597	+15.20
1961	8.20	+21.29	2.015	+26.20
1971	10.42	+27.11	2.576	+27.83
1981	13.77	+32.09	3.426	+32.97
1991	18.42	+33.81	4.400	+28.44
2001	22.87	+24.14	5.650	+28.41
2011	26.77	+17.02	6.854	+21.30

स्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2011

आरेख 1

सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि दर (1901–2011)

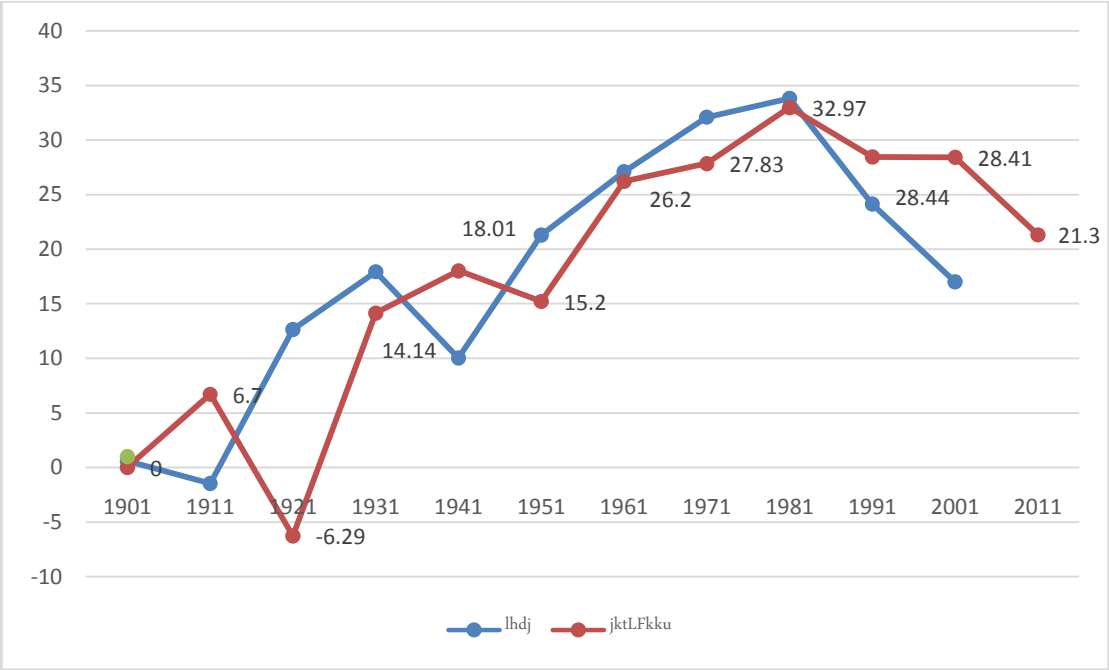

सारणी 1 तथा आरेख 1 का विश्लेषण करने पर देखा गया की सीकर जिले में अधिकांश जनगणना वर्षों में राजस्थान की औसत जनसंख्या वृद्धि से कम जनसंख्या वृद्धि हुई है। सीकर जिले में सर्वाधिक वृद्धि 1991 में 33.81 प्रतिशत रही जबकि 1921 में जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक –1.46 प्रतिशत रही। इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि को विश्लेषित करने हेतु चार अवस्थाओं में बांटकर इस प्रकार समझ सकते हैं –

1. **प्रथम अवस्था (1901–1921)**– इसे ऋणात्मक अवस्था कहा जा सकता है। इस दौरान 1901 से 1911 में मात्र 0.60 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि 1911 से 1921 के दौरान सीकर जिले की जनसंख्या वृद्धि 1.46 प्रतिशत ऋणात्मक वृद्धि दर के साथ घटी है।

2. **द्वितीय अवस्था (1921–1951)** – इस अवस्था को निम्न वृद्धि दर की अवस्था कहा जा सकता है सीकर जिले में 1921 में ऋणात्मक वृद्धि दर के बाद 1931 में 12.65 प्रतिशत, 1941 में 17.93 प्रतिशत तथा 1951 में 10.04 प्रतिशत वृद्धि दर रही है। इस अवस्था में राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की स्थिति में सुधार के कारण मृत्यु दर में गिरावट हुई लेकिन जन्म दर पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

3. **तृतीय अवस्था (1951–1991)** – इस अवधि को जनसंख्या विस्फोट की अवधि कहा जाता है। इस समय जनसंख्या वृद्धि दर में तेजी से वृद्धि हुई जिसका प्रमुख कारण शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के कारण मृत्यु दर में तीव्र गिरावट तथा उच्च जन्म है। 1981 में दशकीय वृद्धि दर 21.29 प्रतिशत थी जो 1991 में बढ़कर 33. 81 प्रतिशत हो गयी।

4. **चतुर्थ अवस्था (1991 के पश्चात्)** – इस अवधि के दौरान जनसंख्या वृद्धि दर में धीरे–धीरे कमी दर्ज की गयी है जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि घटती दर से हो रही है 2011 में जनसंख्या वृद्धि 17.02 प्रतिशत रही।

तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि :

सीकर जिले में तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण सारणी 2 में किया गया है जिसमें 2001–2011 की जनसंख्या वृद्धि को आधार माना गया है।

सारणी 2

सीकर जिले में तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि (2001–2011)

तहसील	जनसंख्या 2001	जनसंख्या 2011	जनसंख्या वृद्धि दर प्रतिशत
फतेहपुर	261071	305638	+17.07
लक्ष्मणगढ़	283689	320956	+13.13
सीकर	530871	644186	+21.34
दांतारामगढ़	358581	423314	+18.05

श्रीमाधोपुर	506979	583328	+15.05
नीमकाथाना	346597	399911	+15.38
योग	2287788	2677333	+17.02

स्रोत : Census of India, Rajasthan, District Census Handbook Sikar District 1971-2011.

आरेख 2

सीकर जिले में तहसीलवार जनसंख्या वृद्धि 2001–2011

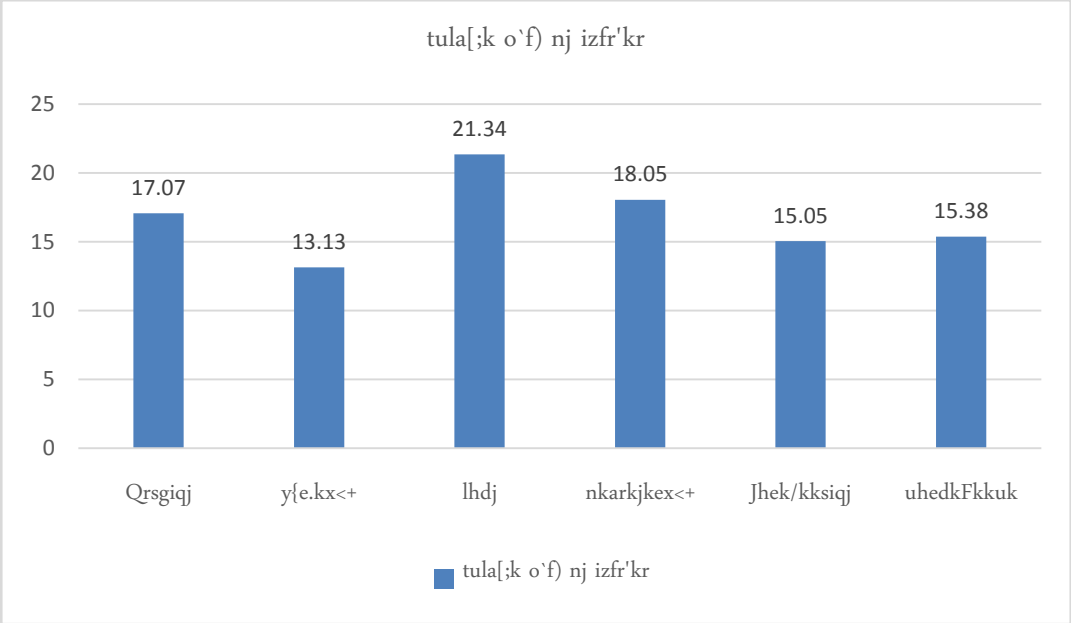

सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि को तहसीलवार भिन्नता देखने को मिलती है। 2001–2011 की अवधि में सीकर जिले की औसत जनसंख्या वृद्धि 17.02 प्रतिशत रही। सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर सीकर तहसील में 21.34 प्रतिशत रही जबकि न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि लक्ष्मणगढ़ तहसील में 13.13 रही। सीकर में अधिक वृद्धि दर का कारण नगरीकरण, शिक्षा तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं का उपलब्ध होना रहा जबकि लक्ष्मणगढ़ में गिरता भूमिगत जल स्तर, रोजगार की तलाश में प्रवास प्रमुख कारण रहे।

निष्कर्ष व सुझाव

प्रस्तुत शोध पत्र में सीकर जिले की जनसंख्या वृद्धि मानव संसाधन के रूप में अध्ययन किया। इस शोध पत्र में सीकर तथा राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि का तुलनात्मक विश्लेषण भी शामिल है जिसमें पाया कि सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि दर राज्य की औसत वृद्धि दर से कम रही है।

प्रस्तुत शोध पत्र के आधार पर कुछ सुझाव इस प्रकार है –

1. जनसंख्या वृद्धि के साथ ही लोगों में कौशल तथा तकनीकी हुनर विकसित करने हेतु उच्च शिक्षा तथा कौशल विकास कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए।

2. लोगों को स्वरोजगार हेतु कौशल हेतु प्रशिक्षण के साथ ही वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- Census of India, Rajasthan District Census Handbook, Sikar District 1971

2- मौर्य एस.डी. (2009) : जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

3- Census of India, Rajasthan District Census Handbook, Sikar District 2011

4- जिला सांख्यिकी रूपरेखा जिला सीकर 2018

5- चान्दना, आर.सी. (2014) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, जयपुर।

6- मीणा, जगमाल (2016) : भीलवाड़ा जिले में जनजातिय जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन, JETIR January, 2016, Volume 3.

7- fiz;adk vkSj vYdk ¼2018½ % tula[;k o`f) ,oa ?kuRo dk rqyukRed v/;;u] jktLFkku jkT; ds mÙkjh&iwohZ ftyksa ds fo'ks"k lanHkZ esa] fjlpZ fjO;w tujy] okWY;we 03] 2018

8- 'kadjyky] dqM+h jktsUnz ¼2019½ % lhdj ftys dh Jhek/kksiqj rglhy esa tukafddh dk fo'ys"k.k] International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Science, Volume-7, January-June 2019

9- pkS/kjh] fo'oftr- dqekj fnus'k ¼2019½ % tulkaf[;dh; fo'ks"krkvksa ds {ks=h; forj.k dk fo'ys"k.k % tuin jk;cjsyh dk ,d izrhd v/;;u]Journal of Emerging Technologies and Innovation Research (JETIR), Volume-6.